20वीं शताब्दी में उर्दू पत्र पत्रिकाओं का इतिहास

नीलम

प्रस्तावना :

सन् 1857 के बाद से 1947 तक राजस्थान के विभिन्न शहरों में उर्दू के प्रतिदिन, साप्ताहिक एवं पाक्षिक अखबार के अतिरिक्त मासिक पत्रिका भी प्रकाशित होती रही। ऐसी पत्र पत्रिकाओं में ख़बरे गुलदस्तों (एक प्रकार की उर्दू लेखन शैली) के रूप में भी प्रकाशित की जाती थी और इन रिसालों में एक तरह के गज़लों को भी प्रकाशित किया जाता था।[1] इन उर्दू पत्र–पत्रिकाओं के माध्यम से राजस्थान की सामाजिक हलचल, शिक्षित और स्वतंत्र विचारकों की मनोदशा और उर्दू शायरों की व्यंग्य टिप्पणियां प्रकाशित होती रही। जो राजस्थान के क्रमबद्ध इतिहास लेखन में पर्याप्त उर्दू साहित्य का संकलन उपलब्ध कराते है।[2]

आजादी के बाद राजस्थान में समाचार पत्रों के अलावा मासिक और छःमासिक साहित्यिक पत्रिकाएँ मौलाना अबुल कलाम आजाद अरबिक एण्ड परशियन रिसर्च इन्सटीट्यूट राजस्थान टोंक का सालाना जनरल और विश्वविद्यालयों और कॉलेजों के वार्षिक मैंगजीन की प्रकाशन के कारण राजस्थान में पत्रकारिता को तरक्की मिली, हालांकि समाचार पत्र का स्थान बहुत बुलन्द नहीं हुआ, और बहुत से समाचार पत्र बहुत दिनों तक जारी नहीं रह सके, तथापि रियासो व स्वतंत्रता प्राप्ति के बाद राजस्थान में दैनिक समाचार पत्रों के अतिरिक्त मासिक और छःमाही साहित्यिक उर्दू पत्रिकाएं प्रकाशित होने लगी।[3] इसके साथ ही मौलाना अबुल कलाम आज़ाद अरेबिक एण्ड परशियन रिसर्च इन्सटीट्यूट राजस्थान टोंक का वार्षिक जरनल और विश्वविद्यालयों और सरकारी कॉलेजों को वार्षिक मैंगजीनों के निरंतर प्रकाशन से राजस्थान में उर्दू पत्रकारिता की प्रगति में मदद मिली, क्योंकि इन उर्दू पत्रिकाओं में सामाजिक परिवर्तनों को दृष्टि में रखते हुए लेख प्रकाशित किए जा रहे थे। इनमें कई महिला स्वतंत्र पत्रकार भी कार्य कर रही थी जो उस समय आ रहे मुस्लिम महिला परिवेश को निष्पक्ष अपने लेखों के माध्यम से प्रकट कर रही थी।[4] हालांकि इसी दौरान कई समाचार पत्रों का योगदान अधिक नहीं रहा और कई पत्र तो अधिक समय तक प्रकाशित नहीं हो सके और उनके मालिकों को उन्हें बंद करना पड़ा। लेकिन फिर भी उनकी खबरों के असर को नजर अंदाज नहीं किया जा सकता।[5]

इसके अलावा राजस्थान में साहित्यिक पत्रकारिता की उन्नति बनी रही। खासतौर पर साहित्य अकादमी राजस्थान उदयपुर की छःमाही (मैंगजीन) पत्रिका 'नखलिस्तान' थी। जिसका पहला (शुमारा) अंक 1964 में जारी हुआ था और राजस्थान उर्दू अकादमी जयपुर में बनने तक जारी रहा इसके बाद यही छःमाही मैंगजीन राजस्थान उर्दू अकादमी जयपुर की ओर से प्रकाशित होने के बाद आद्यतन लगातार प्रकाशित हो रही हैं।[6] इसी तरह मौलाना अब्दुल कलाम आजाद अरेबिक एण्ड परशियन रिसर्च इन्स्टीट्यूट राजस्थन टोंक का वार्षिक जनरल 1980–81 में प्रारंभ हुआ और निरन्तर जारी हैं।[7] अब तक इसकी 30 से अधिक प्रतियाँ प्रकाशित हो चुकी है।

इसी तरह स्वतंत्रता के बाद राजस्थान से प्रकाशित होने वाले समाचार पत्रों में सब से अधिक समय तक जयपुर का पाक्षिक समाचार पत्र "बशारत" 1964 में प्रारंभ हुआ था[8] जो लगभग 14–15 वर्षों तक निरन्तर प्रकाशित होता रहा। इसमें समाचारों के अलावा शैक्षिक और साहित्यिक लेख और (शायरो) कवियों और साहित्यिकारों के विचार भी प्रकाशित होते थे। सन् 1969 में "गालिब सदी" (तकरीबात) का जयपुर में उच्च स्तर पर आयोजन किया गया था। इन संगोष्ठियों में शायरी रचना के अलावा संक्षिप्त लेख और साक्षात्कार पर आधारित (एडिटोरियल) संपादकीय भी बशारत में प्रकाशित हुए।[9] जो कि उर्दू पत्रकारिता की उन्नति में महत्वपूर्ण कदम साबित हुए।[10]

इसके अलावा बशारत और अश्तराक व तआऊन अंजुमन तरक्की के संयुक्त तत्वावधान ने उर्दू राजस्थान का एक खास हिस्सा

"गालिब नुमा" के नाम से 1970 ई. में प्रकाशित किया गया था।[11] इसी तरह टोंक का "नदीम" सन् 1971 ई. में साप्ताहिक सन् 1972 ई. में पाक्षिक और सन् 1981 में मासिक के रूप में प्रकाशित हुआ और इसके बाद फिर (पन्द्रह रोजा) पाक्षिक समाचार पत्र के रूप में 2005 तक प्रकाशित होता रहा था "नदीम" के अन्य महत्वपूर्ण अंक (खुशुसी शुमारे) भी प्रकाशित हुए।[12] टोंक ही से मासिक समाचार पत्र "शफक जून 1998 में जारी हुआ जो काफी समय तक जारी रहा।[13] इसके कई विशेष अंक भी जारी हुए। उदाहरण के तौर पर अगस्त 1998 में "आजादी नम्बर" सितम्बर 1999 में ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती नम्बर इत्यादि। राजस्थान में ऐसी उर्दू पत्रिकाएं भी प्रकाशित हुई जो केवल अपनी झलक दिखाने के बाद नजर नहीं आई।[14]

'रिसाला कौम' (जयपुर, 1902) जयपुर से 1902 से प्रकाशित किया जाता था।[15] बाद में आर्थिक कारणों से इसे बंद कर दिया गया। जिसे 2010 में दोबारा शुरू किया गया है जो कि हिन्दी में और उर्दू में छपता है। इसके संपादक असासुद्दीन अहमद तस्नीम थे जो कि इसके मालिक भी थे।[16] इसकी वार्षिकी कीमत 2 रुपये थी। कौम प्रिन्टिग प्रेस से छपता था।

हितकारी, (जयपुर 1907) मासिक पत्र 1907 से प्रकाशित होता था।[17] जो कि जयपुर से निकलता था। ये समाचार पत्र सनातन धर्म और शिक्षा की उन्नति और संस्कृति के पल्लवन के लिए प्रकाशित किया जाता था। इसका प्रकाशन हीरालाल प्रेस जयपुर से किया जाता था।[18]

'औरतों का राजदार' 'मुशीर–ए–माहवार' भाग–प्रथम (जयपुर, 1920) के संपादक सैय्यद रियाजल हसन साहब, सैय्यद इरशाद अली, थे। ये समाचार–पत्र जयपुर से प्रकाशित किया जाता था। इसमें महिलाओं सम्बन्धी खबरे और फीचर प्रकाशित किए जाते थे। ये समाचार–पत्र जयपुर के मुइनुसीपल कमीश्नर साहब सैय्यद शौकत हुसैन साहब कादमी के मार्गदर्शन में प्रकाशित किया गया। ये अप्रैल 1920 में प्रकाशित किया जाता था। इसकी प्रिन्टिंग आगरा अखबार प्रेस में छपता था। इसमें एक लेख में लिखा है बच्चों को अपने माता–पिता के प्रति अपने कर्त्तव्य निभाने चाहिए।[19]

कैफ़, (अजमेर 1927) अजमेर से प्रकाशित होता था। माह जुलाई 1927 का अंक के संपादक रफीयी अजमेरी थे। इस अंक के मुख्य पृष्ठ पर पाठको के लिए एक संदेश लिखा है वो ये है "हमें अफसोस है कि ये अंक समय पर प्रकाशित नहीं कर सके क्योंकि व्यवस्थाओं में हमें देरी हो गई थी। इस कमी को पूरा करने के लिए हम 64 पृष्ठों की जगह 82 पृष्ठ प्रकाशित कर रहे है।" उपरोक्त वाक्यांश से हमें पता चलता है कि कैफ़ 64 पृष्ठ का पत्र प्रकाशित होता था। संभव ये भी है कि आर्थिक कमी के कारण ही इसके प्रकाशन में देरी हुई होगी।[20]

मुशीर ए राजस्थान (जयपुर, 1930) सन् 1930 से जयपुर से प्रकाशित किया जाता था। इसके संपादक हकीम नुरुल हुसैन सिद्दीकी थे। इस साप्ताहिक सामचार पत्र का का वार्षिक मूल्य 4 रूपये था। ये समाचार–पत्र मुशीर राजस्थान प्रेस, जयपुर में छपता था।[21]

आस्ताना, (अजमेर, 1930) का रजिस्ट्रेशन नम्बर एन 380 था और स्टार प्रेस अजमेर से मुद्रित होता था। आस्ताना, जिल्द 4, अंक संख्या–1 है जो कि हिजरी संवत् 1349 के रजब माह की 6 तारीख का है यानि शक संवत् 1930 28 नवम्बर, शुक्रवार को प्रकाशित किया गया है। इस अंक के मुख्य पृष्ठ पर ऊपर की ओर 786 अंकित है। इस अंक के पृष्ठ संख्या एक यानि मुख्य पृष्ठ पर अजमेर की प्रसिद्ध दरगाह शरीफ का फोटो है और उस पर लिखा है कि "गरीब नमाज से आस्था रखते हुए लिखा गया अखबार"। इसकी कीमत 4 आना प्रति कॉपी थी। इसके संपादक कामिल अजमेरी थे। पृष्ठ संख्या 4 पर ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की जीवनी और उनके परिवार के बारे में पूरी जानकारी दी गई है। इस अंक के एक लेख में बताया गया है कि ख्वाजा साहब की शादी 610 हिजरी में हुई थी तब इनकी आयु लगभग 80 वर्ष के आस–पास थी। इनकी जन्म तिथि 530 हिजरी बताया है। इस लेख में इनके पिता गयासुद्दीन के बारे में भी बताया गया है। ख्वाजा साहब जो कि सूफी संतो में सबसे ऊंचा दर्जा लिए हुए है, उनकी दोनों बीबीयों के बारे में बताया गया है, इनकी पहली बीबी हजरत बीबी अफ्फत और दूसरी बीबी का नाम उम्मतुल्लाह था। इनकी चार संताने भी हुई जिनमें तीन बेटे और एक बेटी थी। अर्थात् इस अंक में सूफी संत ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती के सम्पूर्ण जीवन काल और परिवार के बारे में जानकारी दी है। इसी अंक के प्रथम पृष्ठ पर पिछले अंक की गलत छपाई के लिए संपादक ने माफीनामा प्रकाशित किया है। इसमें उन्होंने लिखा है कि "पिछले अंक की छपाई दिल्ली से करवाई थी जो कि आप लोगों को पसंद नहीं आई। उसके लिए मुझे बेहद अफसोस हैं।"[22]

बलाग, (अजमेर, 1940) अखबार के प्रथम कवर पेज पर समाचार पत्र की पूरी जानकारी दी गई है। जिसमें पत्र के ऊपरी हिस्से के दायी और जिल्द संख्या 1 और अंक नम्बर 21 से 23 तक और बायीं और उर्दू दिनांक अंकित है। जिसमें शाहवान माह की दिनांक 21 और 1359 हिजरी संवत् अंकित है। इसकी कीमत प्रति कॉपी 2 आना थी यानि आज के रूपए के लगभग 12) पैसे के बराबर है। ये दो रोजा यानि दो दिन में एक बार प्रकाशित होनेवाला समाचार पत्र था। पत्र में सबसे ऊपर 786 अंकित है, उर्दू में बिस्मिल्लाहि रहमार्निि–रहीम है अर्थात् "शुरू करता हूँ अल्लाह के नाम से जो बड़ा महरबान और दयालु है। ये अंक रमजान महीने पर प्रकाशित विशेष अंक है। इसके संपादक कारी अब्दुर्रहमान इराकी थे। जो कि संदल खाना मस्जिद के इमाम और दारूल अलुम मुईना इस्लामिया दरगाह शरीफ अजमेर के साहित्यिक लेखक थे। इस समाचार पत्र का प्रकाशन दारूल इशात तामिलमात, त्रिपोलिया दरबाजा के कारी अब्दुर्रहमान इराकी प्रिन्टर और पब्लिशर्स के मुईन प्रेस अजमेर से प्रकाशित किया जाता था।[23]

अलवर पत्रिका, (अलवर, 1943) साप्ताहिक का प्रकाशन अलवर से 1 जनवरी, 1943 को कुंज बिहारीलाल मोदी ने किया। अपनी निर्भीक व निष्पक्ष पत्रकारिता के कारण यह पत्र शीघ्र ही लोकप्रिय हो गया। राजस्थान के निर्माण के बाद इस पत्र का प्रकाशन जयपुर से होने लगा। पत्र का उद्देश्य रियासतों में उत्तरदायी प्रशासन की मांग को गति देना और राष्ट्रीयता का प्रचार–प्रसार करना था। 'अलवर पत्रिका' को न केवल पराधीनता के युग में अपितु स्वाधीनता प्राप्ति के बाद भी अपने अस्तित्व के लिए भारी संघर्ष करना पड़ा। अनेकानेक कारणों से 1966 में इसका प्रकाशन बंद हो गया। बाद में इस नाम से एक साप्ताहिक का प्रकाशन श्री शिशिर मोदी ने किया।[24]

खादिम, (अजमेर, 1948) अगस्त, 1948 ई. में प्रकाशित किया जाता था। इसके संपादक मुमताज मोहम्मद थे और निर्देशक डॉ. इशरत हसन, एम.ए., पीएच.डी. थे। ये उर्दू भाषा में छपने वाली पत्रिका मासिक थी। इस पत्रिका के मुख्य पृष्ठ पर अष्टकोणीय तारा बना हुआ है। जिसके खानों में आठ, संदेश लिखे हैं वह संदेश इस प्रकार है:–मिल्लत–कौम, हकीकत–सच्चाई, मारेफत–लगाव, हुर्रियत–बहादुरी, शरीयत–इस्लामी कानून, तरीकत–तरीका, मोहब्बत–प्रेम। इसकी वार्षिक कीमत 4 रूपये है। उस समय प्रति कॉपी 3 आना थी। इस अंक के पृष्ठ में अजमेर स्थित ख्वाजा मुईनुईद्दीन चिश्ती की दरगाह का गुम्बद अंकित है। इसके दायी ओर ऊपर एक (शेर) पंक्ति अंकित है। जिसका भावार्थ है:– "समाज की सेवा करने वाला (खादिम) होता है और वही समाज का सच्चा सेवक सरदार होता है।"[25]

इस उर्दू पत्रिका का प्रकाशन अजमेर के झालरा से किया जाता था। साथ ही उर्दू पत्रिका खादिम के मुख्य पृष्ठ पर अर्द्ध चन्द्रमा की आकृति अंकित है जिस पर लिखा है "हुक्ल मईन" अर्थात् मददगार ख्वाजा।[26]

प्रथम पृष्ठ पर पत्रिका में प्रकाशित होने वाली सामग्री की सूची भी शामिल की है जिसमें लेख का शीर्षक, लेखक का नाम आरै पृष्ठ संख्या अंकित है। इसमें 16 लेख शामिल किए गए हैं जिसमें कव्वाली, मनकवत और अन्य धार्मिक लेख भी प्रकाशित किए गए है। पत्रिका में सबसे पहले हजरत मोहम्मद साहब को जो (मेराज) ईश्वरीय संदेश प्राप्त हुआ था उसका वर्णन किया गया है।[27]

तिब्बी कॉलेज मैगजीन, (जयपुर 1954) राजपूताना आयुर्वेदिक, यूनानी तिब्बी कॉलेज जयपुर की ओर प्रकाशित किया जाता था। शोध में प्रस्तुत अंक 1954 का है। इसके चीफ एडीटर हकीम सलीमुद्दीन खां थे। इंचार्ज हकीम मुईनुद्दीन शाह रियायी संपादक मोहम्मद उस्मान, सहायक जय कुमार जैन थे।[28]

लालवास टाइम्स 1957 (लालवास जयपुर) डेली समाचार पत्र था। जो कि 19 दिसम्बर, 1957 से प्रकाशित हो रहा था। इसके संपादक इकराम कुरैशी थे।[29]

रोशन किरदार, (जयपुर 1957) पत्र जयपुर से 19 दिसम्बर, 1957 से प्रकाशित किया जा रहा था। इसके संपादक और मालिक लईकउद्दीन कुरैशी थे।[30]

हिदायत' (जयपुर, 1958) 1 मई, 1958 से जयपुर से प्रकाशित किया जाता था। ये एक मासिक समाचार–पत्र था। जिसके संपादक अजीजुर्रहीम थे।

दिलशाद, (कोटा, 1958) पाक्षिक समाचार पत्र था जो कि राजस्थान के कोटा जंक्शन से प्रकाशित किया जाता था। मुख्य पृष्ठ

पर ही इस समाचार पत्र की कीमत भी अंकित है। इसकी वार्षिक मूल्य 4 रू. 50 नये पैसे, छःमाही 2 रू. 50 नये पैसे, प्रति कॉपी 37 नये पैसे थी।[31] ये अखबार प्रत्येक माह की पहली और 15 तारीक को निकलता था। इसके संपादक शाद साहब मेरठी थे। ये राजस्थान का पहला शैक्षिक, साहित्यिक और ऐतिहासिक समाचार पत्र था। इसकी पुष्टि समाचार पत्र के मुख्य पृष्ठ पर अंकित इन पंक्तियों से होती है जो कि उर्दू भाषा में लिखी हैः–

"ये राजस्थान का पहला इल्मी, अदबी और तारीकी खबरनामा है" संपादक के इस मुख्य पृष्ठ पर अंकित पंक्तियों से हम इस निष्कर्ष तक जा सकते हैं कि इस समाचार पत्र में शिक्षा प्रधान खबरें प्रकाशित होती होगी जो कि आमजन में सामाजिक, राजनीतिक जागृति प्रदान करती होगी।[32]

बारगाह, (अजमेर, 1961) अजमेर से प्रकाशित होता था। बारगाह का फरवरी 1961 का जिल्द–1 और (शुमारा) अंक–2 के संपादक सैय्यद फजलुल मतीन थे। जो कि अपने घर 370 गली लंगर खाना, दरगाह शरीफ अजमेर से ये मासिक समाचार पत्र प्रकाशित कर रहे थे। बारगाह समाचार पत्र की वार्षिक कीमत 5 रूपए, विदेशों में 7 रूपए, छःमाही 3 रूपए और प्रति कॉपी 8 आना थी। इसकी कीमत समाचार पत्र के मुख्य पृष्ठ पर अंकित है।[33]

नखलिस्तान, (उदयपुर, 1964) सबसे पहले उदयपुर से 1964 में प्रकाशित किया गया था। शोध में प्रयुक्त अप्रैल से जुलाई 1964 का ये अंक उदयपुर से प्रकाशित है जो कि त्रैमासिक पत्रिका थी। जिसकी कीमत 2 रु. थी। इसके संपादक प्रोफेसर प्रेमशंकर श्रीवास्तव, ज्वाइंट एडिटर आबिद हुसैन अदीब थे। ये साहित्य अकादमी राजस्थान उदयपुर से प्रकाशित की जाती थी। जो कि कलीमी प्रेस मामू भांजा अजमेर में प्रिंट होती थी। इसका पहला अंक 29 फरवरी, 1964 में उदयपुर से प्रकाशित किया गया था। इसमें समय समय पर संपादक बदलते रहे। चूंकि ये एक संस्थागत निकाली जाने वाली उर्दू पत्रिका थी इसलिए इसमें साहित्य प्रधान सामग्री अधिक प्रकाशित की जाती थी।[34]

बशारत, (जयपुर 1966) 'फोर्थ नाइट' समाचार–पत्र था जो कि जयपुर से प्रकाशित किया जाता था। 24 अक्टूबर, 1966 में इसका पंजीकरण किया गया था। इसके मालिक तजल्ली उस्मानी थे।[35]

पयाम ए वहादत, (जयपुर 1966) समाचार पत्र भी जयपुर से 26 नवम्बर, 1966 से प्रकाशित किया जा रहा था। इसके मालिक हकीम सईद, अहमद सईद थे।[36]

गालिबनुमा, (अजमेर 1970) पत्र का नाम ही कैलीग्राफी शैली में अंकित है। इसकी कीमत 4 रुपये वार्षिक थी। ये 1970 से प्रकाशित किया जाता था।[37]

शतधारा, (टोंक, 1971) पत्रिका टोंक के गवर्नमेंट कॉलेज से प्रकाशित की जाती थी। ये पत्रिका वार्षिक थी। इसमें 1971–72 के संपादक ए.एफ. उस्मानी, स्टूडेंट एडिटर याकूब अली खां थे। उर्दू सेमीनार स्पेशल अंक था। टोंक के गवर्नमेंट कॉलेज में आयोजित ऑल इंडिया उर्दू सेमीनार में पढ़े शोध पत्रों का विवरण इसमें दिया गया है। जो कि अलजामियत प्रेस दिल्ली में छपा था।[38]

गुलजार–ए–हमीद, (झुंन्झूनु 1971) झुंझुनूँ से प्रकाशित होने वाला मासिक पत्र था। इसके मालिक और संपादक इरशाद अहमद फारूकी थे। इसका पंजीयन 13 अक्टूबर, 1971 को हुआ था।[39]

युग की आवाज, (जयपुर 1971) पाक्षिक समाचार–पत्र था। इसके मालिक रमेश मिश्रा थे। ये 27 जनवरी, 1971 से जयपुर से निकलता था।[40]

सुल्तानुल हिन्द, (अजमेर 1972) मासिक उर्दू समाचार–पत्र था, जो अजमेर से प्रकाशित किया जाता था। ये समाचार पत्र 1972 से पीर दादा सैय्यद इशरत हुसैन और हजरत शैखुल मशायख दीवान सैय्यद सौलत अली खान के निर्देशन में निकाला जा रहा था। इसका वार्षिक मूल्य 7 रुपये और प्रति कॉपी 2 रुपये था। शोध में प्रस्तुत अंक सितंबर 1972, रज्जब 1392 हिजरी का है। ये स्पेशल अंक है जिसकी कीमत 2 रुपये है। इस प्रति में समाचार–पत्र का शीषर्क उर्दू कैलीग्राफी शैली में लिखा है, जिसे देखकर एक बार तो कोई शीर्षक आसानी से पढ़ ही नहीं पायेगा।

इसके प्रथम पृष्ठ पर कुरान शरीफ की आयत लिखी है। इसके दूसरे पृष्ठ पर सम्पादक का चित्र दिया गया है। पृष्ठ संख्या 3

पर प्रकाशन सामग्री की सूची दी गई है। इसके अंतिम पृष्ठों पर जोशांदा (बुखार में दिया जाना वाला काढ़ा) दवा, हिन्दु तेल, हिन्द नमक का विज्ञापन दिया गया है जिसके प्रोपराइटर समाचार–पत्र के मालिक ही हैं। इस अंक में संपादकीय प्रकाशित नहीं है। इससे ये अनुमान लगाया जा सकता है इस समाचार–पत्र के मालिक या संपादक को या तो संपादकीय लेखन की जानकारी नहीं थी या वे इस कॉलम को शामिल नहीं करते होंगे। क्योंकि ये समाचार पत्र सामाजिक और धार्मिक था। ज्यादातर खबरें अजमेर शरीफ दरगाह की छपती थी। अखबार का नाम भी दरगाह से प्रेरित होकर रखा गया था। इसके मुख्य पृष्ठ पर अजमेर स्थित ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह का चित्र अंकित है। इसी आधार पर हम कह सकते हैं कि ये समाचार पत्र अजमेर की दरगाह को समर्पित था।

इस अंक में अजमेर शरीफ दरगाह परिसर में बनी इमारतों की ऐतिहासिकता बताई गई है। इसमें अहाता–ए–नूर, दीवान साहब की हवेली, नूर–चश्मा, आना सागर, बारादरी, गरीब नमाज का लंगर खाना, निजाम दरवाजा, बेगमी दालान, बुदुखाना, जाम–ए–अल्तमश, दौलत बाग, गौस पाक का चिल्ला, अकबरी मजिस्द, बड़ी देग, छोटी देग, मजार–ए–मुबारक, गरीब नमाज का चिल्ला, अढाई दिन का झोंपड़ा, रोजा बीबी हाफिज जमाल (गरीब नमाज की बेटी) इनका वर्णन चित्र सहित किया गया है। इसको असदुल्लाह खां एडवोकेट पब्लिश और प्रिन्ट करवाते थे। इसे न्यू पब्लिक प्रेस दिल्ली में प्रिन्ट करवाया जाता था। इसमें संपादकीय प्रकाशित है लेकिन उसमें संपादक ने आम जन को धार्मिक शिक्षा दी है।[41]

खबरः–

यह समाचार पत्र टोंक से प्रकाशित किया जाता था। इसमें टोंक की प्रमुख खबरों को स्थान दिया जाता था। खबर समाचार पत्र में सामाजिक और धार्मिक खबरें अधिक प्रकाशित की जाती थी।

रिसालत (अजमेर, 1974) उस दौर का उर्दू मासिक समाचार पत्र था जब राजस्थान में पंचायती राज व्यवस्था स्थापित हो चुकी थी। अप्रैल, 1974 में उर्दू समाचार पत्र के संपादक सैय्यद अहमद रशीद सलीम एडवोकेट थे। इसकी कीमत एक रूपया चार आना प्रति कॉपी थी प्रस्तुत समाचार पत्र की कॉपी ईद ए मिलादुन्नवी पर प्रकाशित विशेष अंक है। ये उर्दू/अंग्रेजी भाषा में प्रकाशित होता था। इस प्रति के मुख्य पृष्ठ पर बायी ओर छोटा सा अजमेर की प्रसिद्ध ख्वाजा मुईनुद्दीन चिश्ती की दरगाह का चित्र अंकित है। साथ ही बायी ओर बड़ा गुम्बज और खजूर के पेड़ का बड़ा चित्र अंकित है। ख्वाजा साहब का जीवन दर्शन और इस्लामी धार्मिक ज्ञान पर ये अंक आधारित है।[42]

समाचार पत्र के प्रथम पृष्ठ पर (मुहम्मद साहब के लिए गाये गाने वाले गीत) नात दी गई है। इसके रचनाकार उस समय के प्रसिद्ध कवि नसीब हैदराबादी थे। इस समाचार पत्र में ध्यान आकर्षित करने वाली बात ये है कि इसमें प्रकाशन की तिथि प्रथम पृष्ठ पर ना होकर तीसरे पृष्ठ पर दी गई है। इसी तीसरे पृष्ठ पर इसका संपादकीय प्रकाशित किया गया है।

माहनामा नदीम, (टोंक, 1978) टोंक से प्रकाशित होने वाला मासिक समाचार–पत्र था। जो कि अगस्त 1978 से निकल रहा था। इसका पहला अंक 26 अगस्त, 1978 को प्रकाशित किया गया था। इसके संपादक हनुमान सिंहल थे। सहायक संपादक केसर रशीद भारती, सहायक मकसूद सईदी, सर्कुलेशन मैनेजर मुश्ताक उस्मानी थे। इसकी कीमत 1 रुपया 50 पैसे प्रति कापी थी। इसके संपादक प्रिन्टर आरै पब्लिशर हनमु ान सिंहल ही थे। जो कि आला प्रेस दिल्ली में छपकर आता था। ये बाद में जाकर पाक्षिक भी निकलने लगा।[43]

माहनामा पयामी सलामती, (टोंक 1979) के संपादक मोहम्मद नईम टोंकी थे।[44] इसके मुख्य पृष्ठ पर आर.एन.आई. नं. 35175 आर.जे. 3850 मुद्रित है।[45] ये जयपुर से प्रकाशित होने वाला मासिक पत्र था। जो कि 24 दिसम्बर, 1979 से प्रकाशित किया जा रहा था। अंक जून, 1980 की वार्षिक कीमत 24 रुपये, प्रति कॉपी 2 रु. 50 पैसे थी।[46] बाहरी देशों के लिए 40 रुपये और पाकिस्तान के लिए 30 रुपये कीमत तय की थी।[47] इसके मालिक मोहम्मद नईम टोंकी, नईम मंजिल 3313 जयपुर मोतीकटला से प्रकाशित होता था। इस अंक के काति (कलम से लिखने वाले) सलीम वासिफ फुरकानी टोंकी थे।[48]

रूदाद (निम्बाहेड़ा, 1983) पत्रिका निम्बाहेड़ा से प्रकाशित होती थी। 1 जून 1983 से 31 मई 1984 तक की प्रतियों के मुख्य पृष्ठ पर पाँचवां साल, 5वां अंक लिखा है। इस आधार पर हम कह सकते हैं कि ये संभवतया 1979 में प्रकाशित होना शुरू हुई होगी। इसके मालिक वज्में आशिकाना रसूल थे। ये हवेली दीवान साब अजमेर प्रिन्ट होती थी। इस पत्रिका के संचालन और विकास

में जिन लोगों ने आर्थिक सहयोग दिया था उनके नाम इसके अंतिम पृष्ठों पर प्रकाशित हैं। जिसमें दानदाताओं ने 5 रुपये से लेकर 100 तक आर्थिक मदद की है।[49]

आफसार (जयपुर 1985) पत्र आगरा रोड़ जयपुर से प्रकाशित किया जाता था। इसके एडिटर डॉ. फिरोज अहमद थे।[50]

"शफक" (टोंक) टोंक से प्रकाशित होने वाला समाचार पत्र था। इसके मुख्य पृष्ठ पर आस्ताना ख्वाजा मोइनुद्दीन चिश्ती लिखा है अर्थात् ये भी ख्वाजा साहब को केन्द्रित कर निकाला जाता था। ये एक मासिक समाचार पत्र था। इस समाचार पत्र की प्रति पर कहीं पर भी संपादक का नाम और मूल्य मुद्रित नहीं है।[51]

सुनहरी औराक (टोंक) टोंक से प्रकाशित होने वाले सुनहरी औराक समाचार–पत्र के संपादक जाहिद टौंकी थे। इसमें प्रकाशन की तिथि अंकित नहीं है।[52]

माहनामा हिदायत जयपुर (जयपुर) से प्रकाशित किया जाता था। इस समाचार पत्र के मुख्य पृष्ठ पर एक काव्यांश लिखा है–

"इसे देखकर वा–नकर चश्में हैरत

अभी खामां फरसाइयां और भी है।"[53]

अर्थात् इसे अपनी हैरतभरी आँखों से देखकर अचंभित मत हो अभी तो इस कलम से बहुत कुछ लिखना है।[54] संभवतया ये काव्यांश समाचार–पत्र के हौसले को बता रहा है। ये पत्र मासिक था। ये एक क्रांतिकारी विचारधारा का समाचार–पत्र था।

जाम (बीकानेर) मासिक पत्र था जो कि बीकानेर से प्रकाशित किया जा रहा था। इसका शीर्षक जाम, पैमाने की शक्ल में कैलीग्राफी शैली में मुद्रित की गई है।[55] उर्दू और कैलीग्राफी के साथ शुरू से हैं इसका अंदाजा हम उर्दू समाचार पत्रों के शीर्षकों के सज्जा करने में प्रकट होती है। इसके संपादक जामी साहब थे। इसकी कीमत 4 रुपये वार्षिक और प्रति कॉपी छह आना थी।[56]

लताफत, (अजमेर, झुंन्झुनू) समाचार पत्र अजमेर और झुंझुनूँ से प्रकाशित किया जाता था।[57] इसके संपादक गुलाम हुसैन थे। इसका वार्षिक मूल्य 5 रुपया और प्रति कॉपी 50 पैसे था। ये मासिक समाचार पत्र था। हाजी मौलवी मुहम्मद हाशिम साहब इसके मालिक थे।[58]

साइब (टोंक) पत्र के संपादक हाफिज कमर आसिफ थे। ये टोंक से प्रकाशित किया जाता था।[59]

सित्ता जरूरिया (जयपुर) पत्र के संपादक सैय्यद शौकत हुसैन कादमी थे। रईस देवबंध जिला सहारनपुर मुईनुसीपल कमीश्नर जयपुर इसके मालिक थे। ये आगरा में ख्वाजा सदीक हुसैन प्रेस में छपता था। इस अंक के मुख्य पृष्ठ पर बायीं ओर घडियों का विज्ञापन दिया है[60] जो इस प्रकार है–

"घंटे, घड़ियां और ग्रामोफोन राजपूताना ट्रेडिंग कम्पनी हवामहल बाजार, जयपुर" इसमें हवामहल स्थित राजपूताना ट्रेडिंग नाम से दुकान के संदर्भ में घड़ी और ग्रामोफोन का विज्ञापन दिया है।[61]

इसमें अखबारात–ए–हिन्द शीर्षक से प्रकाशित लेख में राजपूताना में प्रकाशित हो रहे समाचार–पत्रों की जानकारी दी है। इसमें बताया है– "राजपूताना गजट"–राजपूताना गजट उर्दू और हिन्दी दोनों भाषाओं में प्रकाशित होता था।[62] ये अजमेर से प्रकाशित होता था। चराग राजस्थान प्रेस, पुरानी मंडी अजमेर से महीने में चार बार निकलता था। इसमें खास बात ये है कि इसमें कीमतों का विभाजन वर्ग अन्तर के आधार पर तय किया है। इसकी कीमत लिखी है धनवान लोगों से 10 रुपया, आम लोगों से 5 रुपये, विद्यार्थियों से 3 रुपया 50 पैसे अंकित है। इस समाचार–पत्र का उद्देश्य राजपूताने से सम्बन्धित खबरों की जानकारी आमजन तक पहुँचाना था।[63]

सारांशतः 19वीं शताब्दी के मध्य से अन्त तक राजपूताना में लगभग 25 उर्दू पत्र व पत्रिकायें समय–समय पर प्रकाशित हुई, जिनके बारे में हमें सूचना मूल प्रतियों से या दूसरे स्त्रोतों से प्राप्त होती है। इसमें 13 साप्ताहिक पत्र तथा 12 मासिक पत्रिकाऐं थी। इनके प्रकाशन केन्द्र मुख्य रूप से जयपुर, जोधपुर, भरतपुर, टोंक आदि रहे क्योंकि इन्हीं स्थानों पर उर्दू भाषा को पढ़ने व

समझने वालों की संख्या मुख्य रूप से अधिक थी। इन पत्रों की अपनी कोई विशेष दृष्टिकोण प्रस्तुत नहीं किया कुछ पत्रों में तो सम्पादकियों का अभाव था। इनका एकमात्र कार्य दूसरे पत्रों (जिनमें मुख्यतः अंग्रेजी पत्र थे) से समाचार लेकर अपने पत्र के माध्यम से स्थानीय लोगों तक पहुँचाना था, यद्यपि इनमें कभी–कभी कुछ विद्वानों के अच्छे लेख भी प्रकाशित होते थे। इन पत्रों में 'खेरख्वाह खलाईक' था जिसे अयोध्या प्रसाद ने 1860 ई. में अजमेर से प्रकाशित किया था। इसने अपने साहस तथा ऐतिहासिक गौरव का परिचय देते हुए ब्रिटिश सरकार की नीतियों की आलोचना की थी जिसके परिणामस्वरूप इसे अपने जीवन की बलि देनी पड़ी थी। 1857 ई. के विद्रोह के बाद भारत में प्रेस पर कड़ा नियन्त्रण था तथा ब्रिटिश निरंकुशता अपनी चरम सीमा पर थी। ऐसे अवसर पर ब्रिटिश सरकार की आलोचना करना साहस का कार्य था। इन पत्रिकाओं में यद्यपि मुख्य रूप से शायरों के कलाम तथा उर्दू साहित्य से सम्बन्धित लेख प्रकाशित होते थे। इसलिए हम कह सकते हैं कि उर्दू साहित्य के विकास में इन पत्र–पत्रिकाओं ने अभूतपूर्व योगदान दिया। लेकिन कुछ ऐसी भी पत्रिकायें थी जिनमें सामाजिक व शैक्षणिक विषयों पर भी प्रकाश डाला जा रहा था। इन पत्रिकाओं में जयपुर से प्रकाशित होने वाली 'अल मालूमात' पत्रिका में ऐतिहासिक लेख भी प्रकाशित होते थे। यद्यपि उपर्युक्त वर्णित पत्र–पत्रिकाओं में आज कोई भी जीवित नहीं, किन्तु उनके अवशेष विभिन्न पुस्तकालयों में शोध–छात्रों की प्रतीक्षा कर रहे हैं। यदि इन पत्र–पत्रिकाओं की मूल प्रतियों का गहन अध्ययन किया जाए, तो हमें राजपूताने के इतिहास के बारे में पर्याप्त जानकारी उपलब्ध हो सकती है और बहुत सम्भव है कि कुछ नए ऐतिहासिक तथ्य भी प्रकट हों। इसके अतिरिक्त उर्दू साहित्य से सम्बन्धित बहुत सी सामग्री भी हमें इनसे मिल सकती है। इस प्रकार उर्दू समाचार पत्र व पत्रिकाओं के ऐतिहासिक विकास में राजपुताना का भी योगदान नहीं भुलाया जा सकता। इनमें से बहुत से पत्र–पत्रिकाओं को महाराजाओं तथा नवाबों का संक्षरण प्राप्त था।

शोधार्थी
इतिहास एवं भारतीय संस्कृति विभाग,
राजस्थान विश्वविद्यालय, जयपुर

सन्दर्भ सूची

1. डॉ. ए.एम. खाँ, "प्रोसीडिंग्स ऑफ द राजस्थान हिस्ट्री", कांग्रेस, जयपुर सेशन (1978), वॉल्यूम–ग्र
2. डॉ. ए.एम. खाँ, "प्रोसीडिंग्स ऑफ द राजस्थान हिस्ट्री", कांग्रेस, जयपुर सेशन (1978), वॉल्यूम–ग्र
3. डॉ. ए.एम. खाँ, "प्रोसीडिंग्स ऑफ द राजस्थान हिस्ट्री", कांग्रेस, जयपुर सेशन (1978), वॉल्यूम–ग्र
4. डॉ. ए.एम. खाँ, "प्रोसीडिंग्स ऑफ द राजस्थान हिस्ट्री", कांग्रेस, जयपुर सेशन (1978), वॉल्यूम–ग्र
5. डॉ. ए.एम. खाँ, "प्रोसीडिंग्स ऑफ द राजस्थान हिस्ट्री", कांग्रेस, जयपुर सेशन (1978), वॉल्यूम–ग्र
6. डॉ. ए.एम. खाँ, "प्रोसीडिंग्स ऑफ द राजस्थान हिस्ट्री", कांग्रेस, जयपुर सेशन (1978), वॉल्यूम–ग्र
7. डॉ. ए.एम. खाँ, "प्रोसीडिंग्स ऑफ द राजस्थान हिस्ट्री", कांग्रेस, जयपुर सेशन (1978), वॉल्यूम–ग्र
8. डॉ. ए.एम. खाँ, "प्रोसीडिंग्स ऑफ द राजस्थान हिस्ट्री", कांग्रेस, जयपुर सेशन (1978), वॉल्यूम–ग्र
9. औरतों का राजदार, मुशीर ए माहवार, 1920, जयपुर
10. कैफ, 1927, अजमेर
11. मुशीर ए राजस्थान 1930, जयपुर
12. आस्ताना, 1930 अजमेर
13. आस्ताना, 1930 अजमेर
14. आस्ताना, 1930 अजमेर
15. आस्ताना, 1930 अजमेर
16. बलाग अजमेर, 1940
17. बलाग अजमेर, 1940
18. बलाग अजमेर, 1940
19. बलाग अजमेर, 1940
20. अलवर पत्रिका, (1943) अलवर
21. अलवर पत्रिका, (1943) अलवर
22. व अलवर पत्रिका, (1943) अलवर

23. अलवर पत्रिका, (1943) अलवर
24. खादिम–अजमेर 1948
25. खादिम–अजमेर 1948
26. खादिम–अजमेर 1948
27. खादिम–अजमेर 1948
28. खादिम–अजमेर 1948
29. तिब्बी कॉलेज मैग्जीन 1954, जयपुर
30. तिब्बी कॉलेज मैग्जीन 1954, जयपुर
31. तिब्बी कॉलेज मैग्जीन 1954, जयपुर
32. रोशन किरदार 1957, जयपुर
33. दिलशाद 1958 कोटा
34. बारगाह 1961, अजमेर
35. नखलिस्तान 1964, अजमेर
36. तिब्बी कॉलेज मैग्जीन 1954, जयपुर
37. बशारत 1966 जयपुर
38. पयाम ए वहादत 1966, जयपुर
39. गालिबनुमा अजमेर 1970
40. शतधारा टोंक, 1971
41. शतधारा टोंक, 1971
42. गुलजार ए हमीद झुझुंनूँ, 1971
43. गुलजार ए हमीद झुझुंनूँ, 1971
44. युग की आवाज, जयपुर 1971
45. सुल्तानुल हिन्द 1972 अजमेर
46. सुल्तानुल हिन्द 1972 अजमेर
47. सुल्तानुल हिन्द 1972 अजमेर
48. सुल्तानुल हिन्द 1972 अजमेर
49. सुल्तानुल हिन्द 1972 अजमेर
50. सुल्तानुल हिन्द 1972 अजमेर
51. सुल्तानुल हिन्द 1972 अजमेर
52. जाम बीकानेर
53. लताफत अजमेर
54. साइब टोंक
55. सिता जरूरिया जयपुर
56. सिता जरूरिया जयपुर
57. सिता जरूरिया जयपुर
58. सिता जरूरिया जयपुर
59. सिता जरूरिया जयपुर
60. सिता जरूरिया जयपुर
61. सिता जरूरिया जयपुर
62. सिता जरूरिया जयपुर
63. सिता जरूरिया जयपुर